''षिक्षा में मस्तिष्कीय प्रषिक्षण जरूरी''

– आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 18 मई।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कहा कि वर्तमान युग की दो सबसे बड़ी समस्या है चंचलता और आवेश इनके कारण ही पूरे विश्व में हिंसा, अपराध, आत्म हत्याएं बढ रही है। इन समस्याओं से निजात पाने के लिए सबसे ज्यादा आवश्यकता मस्तिष्कीय प्रशिक्षण की है। वर्तमान शिक्षा के साथ बाल पीढी को इसका प्रशिक्षण देना जरूरी है।

वे देवराज मूलचन्द नाहर चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा शिक्षा की समस्या समाधान जीवन विज्ञान विषय पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मस्तिष्क शांत कैसे रखें इसका प्रशिक्षण जीवन विज्ञान के द्वारा किया जा रहा है।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि मुझे विश्वास है कि एक विद्यार्थी को जीवन विज्ञान का सिद्धांत समझाया जाये और उसका प्रशिक्षण दिया जाये तो उसमें परिवर्तन हो सकता है। शिवरात्रिश्वरदेशीकेन्द्र महास्वामी ने इस सच्चाई को समझा और अपने सभी शिक्षा संस्थानों में इसका प्रशिक्षण चालू कर दिया। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान के साथ अहिंसा के विकास पर चिंतन चल रहा है। अहिंसा के विकास के लिए अर्थशास्त्रीय अवधारणाओं को कैसे बदल सकते हैं इस पर सापेक्ष अर्थशास्त्र के रूप में कार्य हो रहा है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि स्वामी शिवरात्रीजी से परोक्ष मिलन अनेक बार हो चुका है, पर आज प्रत्यक्ष मिलन हुआ है इसकी प्रसन्नता है। मैं उसको ही सच्चा साधु या सन्यासी मानता हूं इसमें वैश्विक प्रेम हो, करुणा हो और मैत्री भावना हो। ऐसा सन्यासी ही अच्छा कार्य कर सकता है।

कार्यक्रम में विशेष तौर पर उपस्थित मैसूर के प्रसिद्ध संत शिवरात्रिश्वरदेशीकेन्द्र महास्वामीजी ने फरमाया कि चेतना को जागृत करने पर ही धर्म का पूर्ण रूप सामने आ सकता है। भारतीय संस्कृति में हजारों वर्षों से धर्म ने आध्यात्मिक संबल प्रदान किया है। जिस तरह से बहता पानी उपयोगी होता है वैसे ही बहता हुआ धर्म कल्याणकारी होता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पानी के प्रवाह की तरह भगवान महावीर क संदेशों को विश्व पटल पर फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा भावी पीढी के सर्वांगीण विकास हेतु प्रदत जीवन विज्ञान को गहराई से समझने की नसीहत देते हुए कहा कि आज के युवाओं में अगर कोई बदलाव ला सकता है और उनका जीवन निर्माण कर सकता है तो वह जीवन विज्ञान है।

संत शिवरात्रिश्वरदेशीकेन्द्र महास्वामीजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं पूर्व राष्ट्रपति ए.पी. जे. अब्दुल कलाम के बीच हुए वार्तालाप को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि आचार्यश्री द्वारा चलाये जाने वाले मानवीय एकता के कार्यों ने सबको आकर्षित किया है। उन्होंने जैन विश्व भारती के रमणीय वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रांगण ने आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण किया है। इसके पीछे आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ की दूरदृष्टि बोल रही है।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि वर्तमान में जो समस्याएं सामने आ रही है वे शिक्षा के कारण नहीं है। शिक्षा में कुछ कमी है इस कारण हिंसा आदि की घटनाएं घटित हो रही है। उस कमी को पूरा कर देने पर इन समस्याओं का समाधान हो सकता है। युवाचार्यप्रवर ने

फरमाया कि शिक्षा संस्थानों से तीन अपेक्षाएं होती है। बालक ज्ञानवान बने, आत्मनिर्भर बने, सदाचार संपन्न बने। इन अपेक्षाओं को पूरा करने वाला संस्थान शत–प्रतिशत सफल होता है।

कार्यक्रम में मुनिश्री किशनलालजी ने अपने विचार रखे। श्री ललित जैन ने शिवरात्रिश्वरदेशीकेन्द्र महास्वामी का परिचय प्रस्तुत किया। स्वामी शिवरात्रीश्वर ने आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री को रूद्राक्ष की माला एवं शॉल अर्पित किया। कर्णाटक जीवन विज्ञान अकादमी की तरफ से श्री मूलचन्द नाहर, श्री ललित जैन, श्री बाबूलाल पोरवाल, श्री नेमीचन्द धोका, श्री नरेन्द्रराज सोनी, श्री जब्बरसिंह ने स्वामी शिवरात्रिश्वर को साहित्य, शॉल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। जैन विश्व भारती की तरफ से उपमंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया, आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति की तरफ से अध्यक्ष श्री शांतिलाल बरमेचा ने साहित्य भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमारजी ने किया।

जैन विश्व भारती की सुन्दरता ने स्वामी शिवरात्रीश्वर का मन मोहा

लाडनूं, 18 मई।

जैन विश्व भारती के कण–कण से गुंजता आध्यात्मिक संदेश, निर्भय घुमते सैकड़ों मयुरों को देख स्वामी शिवरात्रिश्वर अभिभूत हो गये। उन्होंने प्रातः सूर्योदय के साथ ही जैन विश्व भारती स्थित तुलसी स्मारक, सचिवालय, कामधेनु, गौतम ज्ञानशाला, विमल विद्या विहार, औषधालय, तुलसी आर्ट गैलरी का अवलोकन किया। उन्होंने एक ही केम्पस में प्रारंभिक शिक्षा से विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा मिलने को अद्भूत बताया।

स्वामी शिवरात्रिश्वर ने स्मारक में बोलती आचार्य तुलसी की आध्यात्मिक दृष्टि एवं कामधेनु बगीचे एवं परिसर में निर्भिक घूमते मयूरों को जैन विश्व भारती के लिए चार चांद लगाने वाला बताया। औषधालय में निर्मित विभिन्न दवाओं को प्रत्येक मानव के स्वास्थ्य हेतु महत्त्वपूर्ण बताया। स्वामीजी ने जैन विश्व भारती की सुन्दर व्यवस्थाओं के लिए सराहना की।

''राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर 21 से''

लाडनूं, 18 मई।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सान्निध्य एवं युवाचार्य महाश्रमण के निर्देशन में जैन विश्व भारती प्रांगण में राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन 21 मई से 30 मई तक किया जायेगा। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित इस शिविर में सम्पूर्ण देश से 13 से 18 वर्ष के बालक–बालिकाएं भाग लेंगे। शिविर संयोजक श्री भूपेन्द्र मूथा ने बताया देश का भविष्य भावी पीढी पर टिका है। इस पीढी को संस्कारी बनाने के लिए इस शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में विभिन्न साधु–साध्वियों एवं समणीगण के द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा।

– अशोक सियोल
99829 03770